MPRA
Munich Personal RePEc Archive

Farmer suicides in India

BAGDE, RAKSHIT

31 January 2019

Online at https://mpra.ub.uni-muenchen.de/109075/
MPRA Paper No. 109075, posted 07 Aug 2021 13:38 UTC

Jan-2019 ISSUE-IV, VOLUME-VII(I)

Published Special issue
With ISSN 2394-8426 International Impact Factor 5.682
Peer Reviewed Journal

Published On Date 31.01.2019

Issue Online Available At : http://gurukuljournal.com/

Organized & Published By

Chief Editor,
Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
Mo. +919273759904 Email: chiefeditor@gurukuljournal.com
Website : http://gurukuljournal.com/

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 5.682
Peer Reviewed Journal

ISSN No. 2394-8426
Jan-2019
Issue–IV, Volume–VII(I)

INDEX

Paper No.	Title	Author	Page No.
1	Journey Towards Paper-Less Country	Vedanand Kishor Almast	1-3
2	Green Marketing --- Its Strategies	Dr. Aparna Abhay Ambekar	4-8
3	Conducting polypyrrole based thin film composites	Neeraja M. Haridas	9-19
5	A Fixed Point Theorem In Densifying Mapping	Satyendra Singh, Vinod Kumar, Ajay Kumar Sharma	17-19
4	Geography Resource and Meaning and Nature	Dr.Kailas V. Nikhade	20-23
6	भारत मी किसान आत्महत्यायें	Dr. Rakshit M. Bagde	24-27
7	चंद्रपुर व गडचिरोली जिल्ह्यातील शासकिय, निमशासकिय कर्मचाऱ्यांवर असलेला अतिरीक्त कार्यभार, त्यामुळे निर्माण होणारा व्यावसायिक ताण व त्याच्या दुष्परिणामाचा चिकित्सक अभ्यास	श्री संदेश देविदास सांनुले	28-30

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 5.682
Peer Reviewed Journal

ISSN No. 2394-8426
Jan-2019
Issue–IV, Volume–VII(I)

भारत मे किसान आत्महत्यायें

Dr. Rakshit M. Bagde
Assistant Professor

प्रस्तावना –

आत्मघाती व्यवहार दुनिया मे एक बडी समस्या है। भारत मे आज किसान आत्महत्यायें एक भीषण समस्या बनी हुयी है। जिसके परिणामस्वरूप किसानों के गुणवत्तापुर्वक जीवन पर बुरा असर पडा हुआ है। किसानों का आत्मघती व्यवहार उनके परिवार,समाज और देश पर बुरा प्रभाव डालता है। द युनायटेड नेशन ऑन सस्टेनेबल डेव्हलपमेंट (UNCSD) के सर्वे के अनुसार सन 1997 से 2005 तक भारत मे हर 32 वे मिनट मे एक किसान आत्महत्या कर रहा है। नॅशनल क्राईम रिकार्ड ब्युरो (NCRB) के आंकडे देखने पर पता चलता है की, 2015 तक किसानों की आत्महत्या में 42% की वृध्दी हुयी है। देश मे 2014 तक हर दिन 15 किसान आत्महत्या कर रहे थे, जो मानविय दृष्टि से देखनेपर एक सोचनीय बात सिध्द होती है। कई अध्ययनों ने विभीन्न स्तरो और पैमानो के आधार पर किसानों के आत्महत्या का अध्ययण किया हुआ है। भारत मे कृषी संकट, बढती उत्पादन लागत, आय की कमी, कृषी ऋण, कम उत्पादकता, बाजार की विफलता और पारिवारीक असमतोल के आधार पर आत्महत्या का अध्ययण कीया हुआ है। इसमे कृषक की ऋणग्रस्तता को मुख्य कारण बताया गया है। राष्ट्रस्तर पर देखे तो यह पैमाना सच साबीत हो राहा है। भारत मे किसान आत्महत्या के कारणों मे ऋणग्रस्तता का प्रमाण 20.6%, पारिवारीक समस्या 20.0% खेती सबंधित मुद्दे 17.2%, बिमारी 13.2%, और नशिले पदार्थोका सेवन 4.4% है। राज्य स्तर पर अध्ययण यह बताता है की, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगड मे क्रमशा 57%, 46% तथा 37% आत्महत्या का कारण ऋणग्रस्तता रही है। नॅशनल सैंपल सर्वे आर्गनाइजेशन (NSSO) के आंकडे बताते है की, भारत मे 2013 से 52% फार्म हाऊसों की स्थिती अत्यंत खराब अवस्था मे है।

शब्द कुंजी – किसान, आत्महत्या, भारत

अध्ययण का उद्देश – 1) किसान आत्महत्या के कारणों की खोज।
2) सरकारी योजना का प्रभाव।

आत्महत्या की व्याख्या –

आत्महत्या शब्द का पहली बार प्रयोग सर थॉमस ब्राउन द्वारा 1642 मे तथा वाल्टर चार्लेटन द्वारा 1657 मे कीया गया। इनसायक्लोपेडीया ब्रिटानिका के नुसार 'आत्महत्या एक घातक परिणाम का कार्य है, जो मृतक के घातक परिणाम के ज्ञान और अपेक्षा के साथ किया गया कार्य है।'

हेमरीन-एनस्टवेटेड (1988) के अनुसार,'आत्महत्या एक गतिवीधी है, जिसमे उद्देश के साथ कार्य शामील है।'

मेरीयम वेबस्टर के अनुसार,'स्वेच्छा से और जानबुझकर अपने स्वयं के जिवन को समाप्त करने की क्रीया है।'

किसानो की आत्महत्या के कारण –

भारत के संदर्भ मे किसानो की आत्महत्या के लिये अनेकों कारणों की चर्चा अनेक विद्वानो ने अपने शोध प्रकल्पो मे कीया गया है।

1) लागतो मे वृद्धी – किसानों पर ऋण का बोझ खेती की लागतो की वृद्धी के कारण हो रहा है। वर्तमाण मे कृषी कि लागते 2005 की तुलना मे चार गुणा बढ गयी है। बिज एव। रसायन, कृषी उपकरण और कृषी श्रम की लागते देश मे दिनों दिन बढती जा रही है, जिसे पुरा करणा साधारण किसान के बस का नही रहा है।

2) कृषी ऋण – भारत मे सावकारी तथा संस्थागत दोनो ऋणों का भार किसानो पर देखा जा रहा है। NCRB के आंकडे बताते है की, अकेले महाराष्ट्र मे 1,293 आत्महत्या के पिछे ऋणग्रस्तता यह एकमात्र कारण था। कर्नाटक मे यह 946 थी। 2015 के आकडों से पता चलता है की, महाराष्ट्र मे हुयी 3,000 किसान आत्महत्या मे से 2,474 किसानो ने केवल ऋणग्रस्तता के कारण आत्महत्या की है।

3) जल संकट – खेती की मान्सुन पर निर्भरता खेती विकास मे रूकावट पैदा करती है। 2001 मे महाराष्ट्र मे सिंचायी का क्षेत्र लगभग 18% था। 2013-14 मे भारत मे कुल कृषी भुमी का केवल 4.7 – 14 % भुमी मे ही सिंचायी सुविधा उपलब्ध करायी गयी थी जबकी आज केवल 34.5% क्षेत्र मे ही देश मे सिंचायी सुविधा उपलब्ध है।

4) छोटे किसानोंकी अधिक संख्या – भारत मे छोटे और सिमांत किसानों की संख्या सबसे ज्यादा है।

वर्ग	भुमी धारक संख्या%
छोटे किसान	60%
सिमांत किसान	19%
बडे किसान	7%
भुमीहीन	14%

स्त्रोत-www.kmwagri.com

सरकारी राहत –

2008 मे कृषी ऋणमाफी और ऋण राहत योजना मे 65,000 करोड रू. की लागत से 36 मिलीयन से अधिक किसानोंको लाभान्वीत किया गया। यह खर्च किसानों द्वारा लिये गये व्याज के साथ-साथ ऋण मुलधन के हिस्से को लिखने के उद्देश पर किया गया। 2013 मे भारत मे सरकार ने आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल के किसानों के आत्महतया वाले क्षेत्रो के लिए एक विशेष पशु क्षेत्र और मत्स पालन पैकेज शुरू किया। इस पैकेज का उद्देश किसानों के आय स्त्रोतो मे विविधता लाना था। किसानों की आय और सामाजिक सुरक्षा मे सुधार के बहुआयामी दृष्टिकोण के बावजुद केंद्र सरकार के अनुसार 2013 के बाद हर साल कृषी क्षेत्र मे 12,000 आत्महत्या दर्ज कि गयी। भारत मे किसान आत्महत्या का दर 10% है। 1995-2015 के बिच पंजाब राज्य से 4,687 किसानों की आत्महत्या हुयी, जिसमे से अकेले मानसा जिले से 1,334 किसानों ने आत्महत्या की है।

मंजुनाथ रिपोर्ट के अनुसार, देश मे पुरूष किसानो के साथ-साथ महिला किसानों की संख्या देश मे बढ रही है। कुल किसान आत्महत्या मे महिला किसानों का आत्महत्या दर 15% रहा हैं इसमे तेलंगाना मे 36%, गुजरात 10%, तमिलनाडु 7%, बंगाल 7%, छत्तीसगड 4%, कर्नाटक 4%, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश मे 2% महिला किसानों की आत्महत्या हुयी है।

जाती के आधार पर हुये अध्ययण पर मंजुनाथ रिपोर्ट दर्शाती है की, आत्महत्या ग्रस्त किसानों मे सबसे ज्यादा OBC वर्ग के 46% किसान थे। इसके बाद 29% जनरल, 16% S.C. , तथा 9% S.T. वर्ग के लोगों का समावेश था। S.C. तथा S.T. आत्महत्या ग्रस्त किसान सबसे ज्यादा अकेले छत्तीसगड राज्य से थे। आत्महत्या करने वाले किसानों मे आयु के आधार पर अध्ययण करने पर यह बात सामने आयी है की, आयु 31 से 60 वर्ग मे आत्महत्यायें सबसे ज्यादा थी। इनमे से सबसे अधिक विवाहित थे, अविवाहितों की संख्या सिर्फ 9% पायी गयी।

भारत मे राष्ट्रिय अपराध ब्युरो ने 1995 से किसानों की आत्महत्या का रिकार्ड रखना शुरू किया है। 2014 मे भारत के राष्ट्रिय अपराध ब्युरो ने 5,650 किसानों की आत्महत्या की सुचना दर्ज की है।

सन 2015 मे किसानों की आत्महत्या राज्य के अनुसार

राज्य	संख्या
महाराष्ट्र	3,030
तेलंगाना	1,358
कर्नाटक	1,197
मध्यप्रदेश	581
आंध्रप्रदेश	516
छत्तीसगड	854

स्त्रोत- NCRB 2015

देश मे किसानों की आत्महत्या

वर्ष	संख्या
1995	10,720
1998	16,015
2002	17,971
2004	18,241
2010	15,964
2011	14,027
2012	13,754

2013	11,772
2014	12,360

स्त्रोत- NCRB

सन 2016 मे अकेले महाराष्ट्र राज्य मे 23,000 से अधिक किसानों ने आत्महत्या की हैं। हाल ही मे देश की संसद मे किसानों की आत्महत्या पर प्रश्न पुछा गया जिसके जवाब मे देश के कृषी राज्य मंत्री पुरूषोत्तम रूपाला ने लिखत जवाब मे कहा कि,'2015 तक की किसानों की आत्महत्या की रिपोर्ट उनकी वेबसाईट पर उपलब्ध हैं। 2016 के बाद की रिपोर्ट अभी तक प्रकाशीत नही हुयी है।' कृषी राज्य मंत्री का यह जवाब हमे बतात है की सरकार किसानों की आत्महत्या पर कीतनी चिंताग्रस्त हैं। अगर भविष्य मे भी भारतीय किसानों के प्रती सरकार का यही दृष्टिकोण राहा तो भारत मे किसान क्रांती तथा अर्थव्यवस्था में अस्थिरता का माहौल बन सकता हैं। अब तक कि गयी सरकारी मदत किसानों की आत्महत्यायें रोकनें मे ज्यादा सफल नही हो पायी है।

संदर्भ ग्रंथ सुचि –

Aman Sidhu, Inderjit Singh Jaijee (2011)-" Debt and Death in Rural India: The Punjab Story", SAGE Publications Delhi.

Gyanmudra (2007)-"farmer Suicide in India-dynamics and Strategies of Prevention", National Institute of Rural Development, Hyderabad.

Manjunatha A.V. & Ramappa K.B. (2017) – "Farmer Suicides-All India Study", Agro-Economics Research Center, Institute For Social and Economic Change, Bengluru 07.

Mayer Peter (2011) –" Suicide and Society in India"- Routlede/ASAA South Asian Publication Series

Causes of Farmer Suicides in Maharashtra (2005)- Tata Institute of Social Sciences.

National Crime Record Bureau http://ncrb.gov.in